चन्दामामा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र



6



एक समय एक राजा रहता था। उस राजा के कोई लड़का न था। सिर्फ एक लड़की थी। उसका नाम था गौरी। गौरी के बचपन में ही उसकी माँ स्वर्ग सिधार गई थी। इसलिए राजा ने उसे बड़े लाड-प्यार से पाला। उसे कभी किसी चीज की कमी न होने दी। यूँ ज्यादा प्यार-दुलार पाने से वह लड़की सर-चढ़ी हो गई। उसकी जिद्द का क्या कहना था ! जो चीज माँगती थी, तुरन्त देनी पड़ती थी। नहीं तो रो-पीट कर सारा महल सिर पर उठा लेती थी। राजा उसकी कोई बात नहीं टाल सकता था। वह राजकाज में भी अपना हाथ अड़ा देती थी। लोग राजा के डर से उसे कुछ नहीं कह सकते थे। लेकिन मन ही मन कुढ़ते -" न जाने कहाँ की चुड़ैल पैदा हुई है !"

लेकिन गौरी थी बड़ी सुन्दर और गुणी भी थी। उसका गाना बजाना सुनकर सब लोग निहाल हो जाते थे। बुद्धि भी उसकी बड़ी पैनी थी। लोग रहते -"इस सुन्दर और सुगुणी शरीर में जाने यह कुलक्षण कहाँ से आ गए।"

गौरी सयानी हुई। एक दिन वह महल की छत पर टहल रही थी। अचानक उसकी नजर एक युवक पर पड़ी जो पास ही नदी से मछलियाँ मार रहा था। युवक देखने में बहुत सुन्दर था। जात का वह एक मछुआरा था। गौरी ने उसे बुलाया और मछलियाँ मोल कर उसे मुट्ठी भर अशर्फियाँ दे दी। युवक नहीं समझ सका कि राजकुमारी उसे इतनी अशर्फियाँ क्यों दे रही है। फिर भी उसने बड़ी नम्रता से उसे प्रणाम किया और खुश होकर घर चला गया। गौरी इसी तरह रोज उसे एक मुट्ठी अशर्फियाँ देने लगी। एक दिन अचानक वह उस मछुआरे से पूछ बैठी - "तुम मुझसे ब्याह करोगे ?" राजकुमारी के

मुँह से ऐसी बात सुनकर वह युबक हक्का-वक्का रह गया। पर किसी तरह अपने को सम्भाल कर बोला - "मैं तो मछुआरा हूँ। अगर आपके पिता यह बात सुनेंगे, तो मेरा सर उतार लेंगे।" गौरी ने हँसते हुए कहा -"तुम उसकी चिन्ता न करो। पिताजी को मैं राजी कर लूँगी। वह मछुआरा कुछ न कह सका। गौरी ने तुरन्त पिता के पास जाकर निधड़क यह बात कह दी। राजा राजी हो गया। शादी का मुहूर्त निश्चय हो गया। खर्च-वर्च के लिए मछुआरे को राजा ने बहुत रुपया दिया। बड़ी धूमधाम के साथ बारात आई। कुलाचार के अनुसार शादी हो गई।



राजा के वंश में एक रस्म थी। ब्याह की रात को दूल्हा दुल्हन एक ही थाली में खाते थे। लेकिन गौरी इसके लिए राजी नहीं हुई। लोगों ने उसे बहुत मनाया। लेकिन उसने किसी की नहीं सुनी। राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने बहुत जोर डाला। गौरी चिल्ला उठी -"यह कभी नहीं हो सकता। मैं मछुआरे की जूठन कभी नहीं खा सकती।" यह सुनते ही मनो उन पर बिजली टूट पड़ी। किसी को नहीं मालूम था कि दूल्हा मछुआरा है। लोग आपस में काना-फूसी करने लगे। रनवास की औरतों ने दाँतों तले ऊँगली दवाई। सब लोग कनखियों से दूल्हे की तरफ देखने लगे। उस बेचारे को तो मानो सारे बदन में सैकड़ो बिच्छू डङ्क मारने लगे। वह चुपचाप उठा और दबे पाँव भाग खड़ा हुआ। यह सब गड़बड़ी देखकर गौरी का धीरज छूट गया। वह एक नादान लड़की की तरह रोने लग गई। अब उसकी समझ में आ गया कि ये सब उसकी जिद्द और घमण्ड के कारण ही हुआ। इस हलचल में किसी ने नहीं देखा कि दूल्हा कहाँ गया।



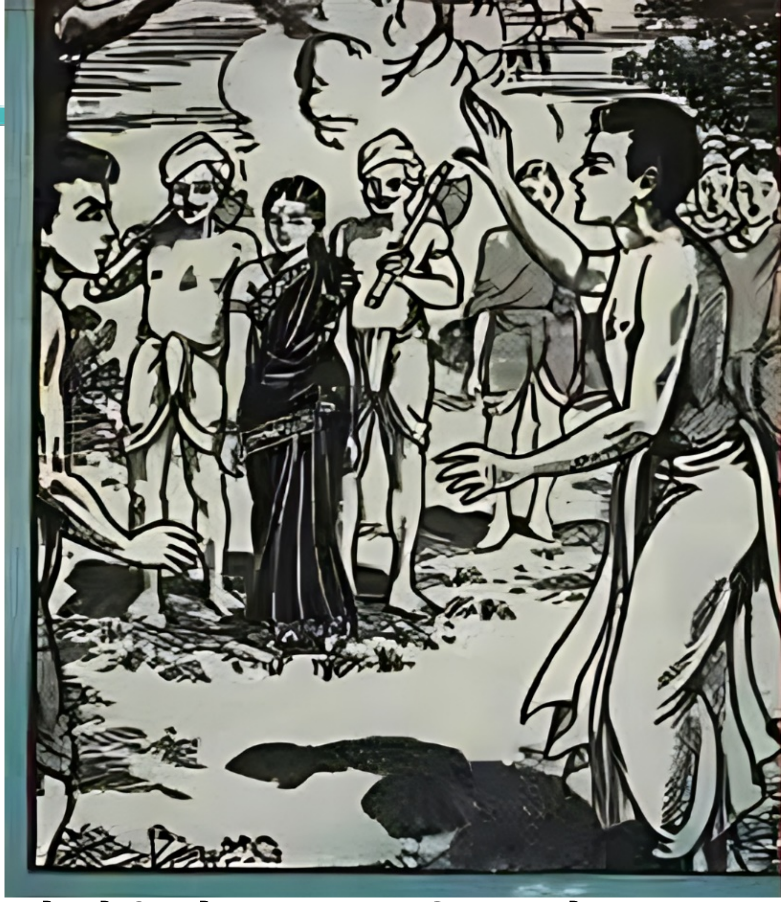
गौरी यह अपमान न सह सकी। वह रातों रात राजमहल छोड़कर अपने पति को ढूँढने निकल गई। भूखी प्यासी, बिपदा की मारी, वह गाँव -गाँव भटकने लगी। आखिर एक गाँव में उसका पति मिला और वह बिल्कुल घबरा गया था। उसने गोरी को पहचाना। लेकिन उससे बिना बोले ही मुँह मोड़ कर चला गया। गोरी बेचारी क्या करती ! वह भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी।

आखिर उसे पता लगा कि उसका पति एक अस्तबल में साईस का काम करता है। गौरी ने अस्तबल के मालिक से जाकर कहा -"आपके यहाँ जो साईस है, वह मेरा पति है। वह मुझसे रूठ गया है। इसलिए वह मुझसे बातें नहीं करता है। आप जरा से समझा दीजिए।" यह सुनकर वह आदमी ठठा कर हँसा और बोला - "तुमने तो अच्छी कहानी गढ़ी। वह तो जन्मजात गूँगा है। फिर तुमसे बातें कैसे करेगा ?" यह सुनकर गौरी को क्रोध आया। उसने सोचा - 'यह मुझे झूठा बनाना चाहता है।' इसलिए उसने कहा -"गूँगा नहीं है। देखना मैं किस तरह उससे बातें कराती हूँ।" "यह तो कभी नहीं हो सकता।" अस्तबल के मालिक ने कहा। "तो मुझे तीन दिन का समय दो। इस बीच में अगर मैं उससे बातें ना करा सकी तो फिर चाहे जो दण्ड देना। " गोरी ने कहा। "जो बाजी लगा कर हार जाते हैं, उसके लिए हमारे देश में एक ही सजा है -प्राण दण्ड। मूर्ख लड़की ! क्यों नाहक अपनी जान गँवाना चाहती है ?" मालिक ने कहा। लेकिन गोरी ने न माना। उसने कहा -"अगर मैं हार गई तो तुम वही दण्ड दे देना।" बाज़ी लग गई।

पहले दिन गोरी ने अपने पति से बातें कराने की बहुत कोशिश की। लेकिन उसने अपना मुँह न खोला। गोरी ने उसको फटकारा। खरी खोटी सुनाई। लेकिन वह कुछ न बोला। उसी तरह चुपचाप लौट गया। गोरी रोने लगी।

दूसरे दिन गोरी ने आँखों मैं आँसू भरकर उसे बहुत मनाया। पुरानी बातें याद दिलाई। लेकिन वह न पसीजा। तीसरे दिन भी वैसे ही बीतने लगा। गोरी बाज़ी हारने लगी। उसको प्राण दण्ड देने की तैयारी हुई।

शीघ्र ही गोरी को प्राण दण्ड मिलने वाला था। गोरी ने आँसू भरी आँखों से पति की ओर देखा। लेकिन उसका पति पत्थर की तरह खड़ा था। तब गोरी ने सभी दर्शकों को अपनी कहानी रो-रो कर सुनाई। लेकिन किसी में दया न पैदा हुई ,बेचारी सिसक सिसक कर रोने लगी। उसे अब अपना अपराध मालूम हुआ। दूसरी बार भी उसके घमण्ड ने उसे धोखा दिया। अब अधिक समय न था। एक दो मिनट



में गोरी को प्राण दण्ड दिया जाने वाला था। इतने में एक आवाज सुनाई पड़ी -"ठहरो ! ठहरो ! उसे न मारो।" सबने उस और फिर कर देखा। वह आवाज गोरी के पति की थी। अब सब लोग अचरज करने लगे कि गूँगा कैसे बोलने लगा ! अब सब लोगों को गौरी की बातों पर विश्वास हो गया। सबको खुशी हुई कि आखिर पति पत्नी में मेल-मिलाप हो गया। गोरी ने अपने पति से क्षमा माँगी। पति ने भी उसे प्रेम से गले लगा लिया। दोनों आनन्द से अपने राज में लौट आए। गोरी का स्वभाव बिल्कुल बदल गया। वह दोनों सुख से रहने लगे।

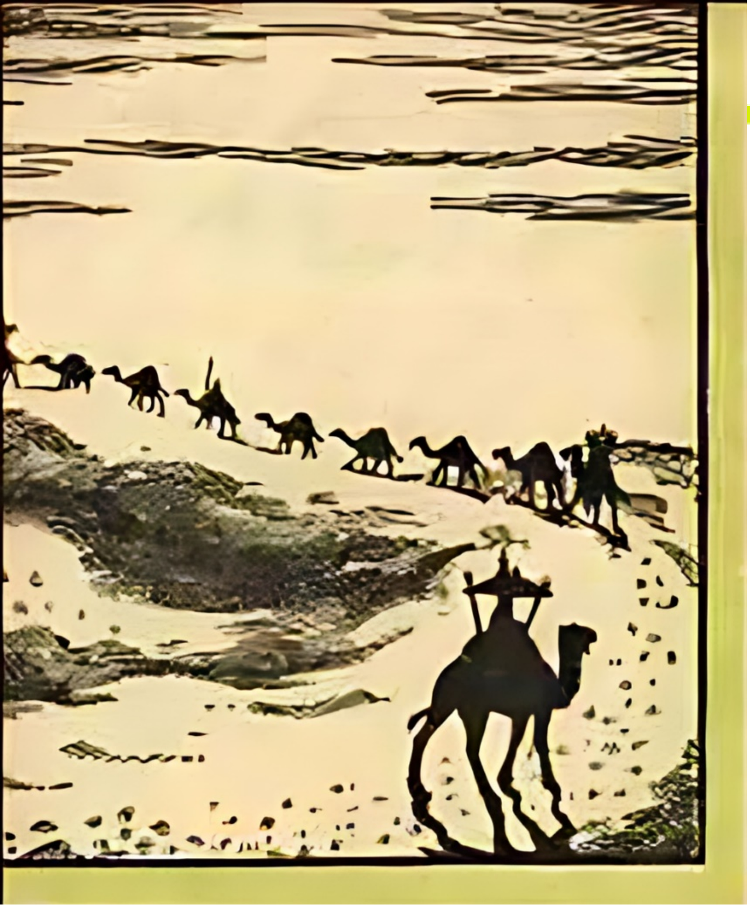


बच्चों ! तुम तो जानते ही होगे कि अरब घोड़े के लिए बहुत मशहूर है। किसी समय अरब के एक गाँव में 'गिजरू' नामक एक आदमी रहता था। वह अपने कबीले का सरदार भी था। गिजरू बड़ा इन्साफ-पसन्द आदमी था। किसी के साथ रू-रियायत करना नहीं जानता था। लेकिन दिल उसका बड़ा नरम था।

गिजरू बड़ा दानी भी था। उसके दान-धर्म की शोहरत हर तरफ फैली हुई थी। दान करने में वह कभी आगा-पीछा नहीं करता था। उसके मुँह से कभी 'नहीं' न निकलता था। उसके पास अपना कुछ नहीं था। जो कुछ था खुद का था और वह उसे खैरात कर देता था। उससे खैरात पाने की आशा में दूर-दूर के लोग उसके पास आया करते थे।

गिजरू के घर जब कोई मेहमान आते तो वह खुद उनकी अगवानी करता और आदर के साथ अन्दर ले जाता। बड़े प्रेम से उनको नहलाता-धुलाता और तरह-तरह के पकवान बनवाकर उन्हें खिलाता-पिलाता। वह उन्हें अपने पलङ्ग पर सुलाता और उन्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होने देता। लोग उसकी खातिरदारी से इतनी खुश हो जाते कि लौटने पर हर जगह उसी की बड़ाई करते। उससे जलने वाले और लालची लोग भी उसके घर जाकर इतने खुश हो जाते कि उनका दिल बदल जाता और वह उसके गहरे दोस्त बनकर वहाँ से जाते।

गिजरू को दुनिया में अगर जान से भी प्यारी कोई चीज थी तो वह उसका एक घोड़ा था। उस घोड़े का नाम था "अमराक" ,वह उसे पर सौ जान से न्योछावर था।



उस समय अरब देश का सुल्तान था इब्रहिम। इब्रहिम बड़ा नेक आदमी था। उसे भी घोड़े का बहुत शौक था। इसलिए वह दूर-दूर से सुन्दर घोड़े मँगवाता और अपने अस्तबल की रौनक बढ़ता।

एक दिन उस सुलतान के कान में किसी ने फूँक दिया -"हुजूर ! आपकी सभी घोड़े से गिजरू का घोड़ा अमराक ज्यादा खूबसूरत है।" यह सुनकर सुलतान ने अपने आदमियों को बुलाया और कहा -"जाओ ! ऊँटों पर अशर्फियाँ लाद ले जाओ और गिजरू को मुँह माँगा दाम देकर अमराक को खरीद लो।"

सुलतान के आदमियों ने जाकर गिजरू से यह बात कही। लेकिन वह राजी न हुआ। तब उन्होंने दाम बढ़ा दिया। फिर भी गिजरू राज़ी न हुआ।सुलतान के आदमियों ने सात गुना दाम बढ़ा दिया। लेकिन गिजरू हर बार इनकार करता गया। उसने बड़े विनय के साथ कहा -"अमराक के सिवा आप और कोई भी चीज माँगिए। मैं देने को तैयार हूँ।"

आखिर सुलतान के आदमी हताश होकर लौट आए और सुल्तान से सब बातें कह सुनाई। तब सुलतान ने मन में सोचा -"न जाने वह घोड़ा कितना खूबसूरत है कि गिजरू किसी भी दाम पर देने को तैयार नहीं होता। जरा में खुद जाकर देख आऊँ ।"

वह भेस बदलकर गिजरू के घर पहुँचा। वहाँ जाकर अमराक को देखा तो उसका दिल काबू से बाहर हो गया। लेकिन वह करता क्या ? जब इस गिजरू ने, जिसके मुंह से 'नहीं' न निकल सकता था, इनकार कर दिया है तो वह कैसे अमराक को पा सकता था ? वह उदास हो अपने महल को लौट आया और इस फिक्र में बीमार पड़ गया।

धीरे-धीरे सुल्तान की बीमारी बढ़ती गई। आखिर सुल्तान के लड़के ने वजीर को बुलाकर कहा -"वजीर साहब ! किसी तरह अमराक को लाना ही चाहिए। नहीं तो अब्बाजान की जान न बचेगी। बोलिए, आपकी क्या राय है ?"

वजीर ने कहा -"शहजादा साहब ! आप घबराइए नहीं। आप तो जानते ही हैं कि गिजरू कैसा दानी आदमी है। उसके मुँह से 'नहीं' कभी नहीं निकलता। फिर उससे यह घोड़ा माँग लेना कौन सी बड़ी बात है ? इस बार आप खुद गिजरू के यहाँ जाइए। उसे सुलतान साहब की बीमारी की बात सुना कर साल भर के लिए घोड़ा माँग लीजिए। कहिए कि एक साल बाद जरूर लौटा दूँगा। आप जाइए, इस बार घोड़ा आपको जरूर मिलेगा।"

शहजादा कुछ सवार साथ लेकर तुरन्त वहाँ से चला और गिजरू के गाँव जाकर देखा तो मालूम हुआ कि सारा गाँव सूना पड़ा है। वह सोच ही रहा था कि अब क्या किया जाए। इतने में उसे गडरिया दिखाई दिया। उसे पूछने पर उसने बताया कि सूखा पड़ जाने के कारण गाँववाले



यहाँ से कई कोस की दूरी पर एक झरने के पास जाकर रहने लगे हैं। शहजादा फिर वहाँ से चलकर थोड़ी देर बाद गिजरू के पड़ाव पर जा पहुँचा। गिजरू ने उसे देखकर बड़ी आव-भगत की। थोड़ी देर में सब लोग खाने बैठे। शहजादा ने ऐसा खाना कभी नहीं खाया था।

खाना खाने के बाद गिजरू ने शहजादे से पूछा -"बताइए ! आप यहाँ क्यों तशरीफ लाए हैं ? मैं आपकी क्या खिदमत करूँ ?"

तब शहजादे ने शर्माते हुए कहा -"मैं आपसे अमराक को माँगने आया हूँ।"

"क्या ? अमराक को ?" गिजरू चकित हो गया। उसके मुँह से और कोई बात न निकली।

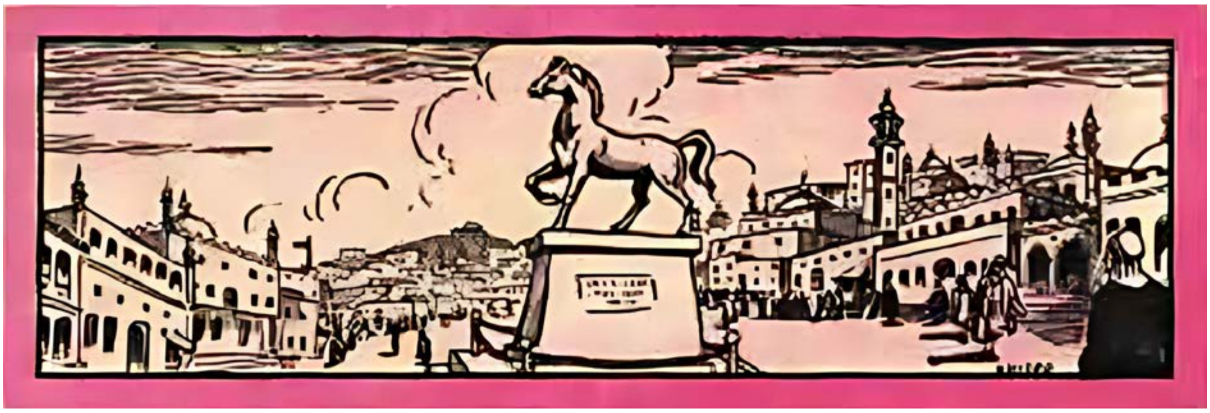
"हाँ,अमराक ही को।" यह कहकर शहजादे ने सारा किस्सा कह सुनाया और अन्त में यह भी कह दिया कि अमराक के बिना सुल्तान की जान न बचेगी। यह सुनते ही गिजरू चुपचाप आँसू बहाने लगा।

तब शहजादे ने पूछा -"क्यों गिजरू ! तुम आँसू क्यों बहा रहे हो?"

गिजरू ने आँसू पोंछते हुए जवाब दिया -"इसलिए कि अब आपको देने के लिए अमराक नहीं रहा। आपके आने पर मैं बड़ी फिक्र में पड़ गया क्योंकि आपको खिलाने के लिए घर में गोश्त नहीं था। तब मैंने अपने प्यारे अमराक को मरवा डाला। आपने जो गोश्त खाया है वह उसी अमराक का था।"

तब शहजादे ने गिजरू को दिलासा देते हुए कहा -"गिजरू ! आज तुम्हारा नाम अमर हो गया। तुमने संसार को दिखा दिया कि मेहमान की खातिरदारी कैसे की जाती है। अमराक तो अब नहीं रहा। लेकिन जब तक दुनिया रहेगी तब तक तुम्हारा और अमराक का नाम लोगों की जवान पर होगा।"

शहजादे ने लौटकर सुलतान को सब कुछ कह सुनाया। कुछ दिन बाद जब सुलतान चङ्गा हो गया तो उसने जिस जगह शहजादे को दावत दी गई थी उसी जगह अमराक की याद में एक बड़ा भारी पत्थर का घोड़ा बनवा दिया। आज भी घोड़े की उसे मूर्ति को देखते ही लोगों को गिजरू का किस्सा याद आ जाता है।





एक गाँव में चिसेसर नाम का एक किसान रहता था। वह बड़ा मेहनती था। सवेरे उठता तो शाम तक कोई ना कोई काम करता ही रहता। कभी बेकार नहीं बैठता। इसलिए कुछ ही दिनों में उसकी जायदाद दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ गई। उसने कई बीघे जमीन खरीद ली और रहने के लिए एक महल बनवा लिया।

यह सब तो था। लेकिन उसके कोई बाल बच्चे न थे। इसलिए वह हमेशा उदास रहा करता था। वह मन ही मन सोचता -"भगवान की कृपा से मुझे खाने-पहनने की कोई कमी नहीं है। दस आदमी मेरे पास माँगने के लिए आते हैं। मुझे किसी के आगे हाथ पसारने की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन इस धन दौलत से क्या फायदा है जबकि सारा घर ही सूना हो रखा है !" इस तरह वह बहुत चिन्ता करता।

आखिर बहुत दिनों बाद भगवान शङ्कर की कृपा से उसके यहाँ एक लड़का पैदा हुआ। इसलिए उसने उसका नाम कृपा-शङ्कर रखा। वह जन्मजात कञ्जूस निकला। दान-पुण्य उसको फूटी आँखों न सुहाता था। उसके माँ-बाप जब किसी को कुछ देना चाहते तो वह रोक देता। उसके माँ-बाप सोचते कि जब वह बड़ा हो जाएगा तो स्वभाव बदल जाएगा। तब उसमें उतनी कञ्जूसी नहीं रहेगी। लेकिन वह ज्यों ज्यों बड़ा होता गया उसकी कञ्जूसी भी बढ़ती गई।

"ऐसे नहीं होगा। अगर उसका ब्याह कर दिया जाए तो बहू जाकर उसको दान-पुण्य करना सिखाएगी। घर की मर्यादा



दिए। खाना खाने के लिए उसने उन्हें दिया मिट्टी का ठीकरा। जब खाने का वक्त होता तो कृपा-शङ्कर रसोइए को साथ लेकर गोठ में जाता। कुछ रूखा-सूखा उन ठीकरों में परोसवाता और पीने के लिए माँड़ देता।

कृपा-शङ्कर के माँ-बाप बेचारे उस पर आस लगाए बैठे थे कि बुढ़ापे में वह उनकी सेवा-टहल करेगा। लेकिन उनकी सारी आशा पर पानी फिर गया। वह उसके नाम को रोने लगे। आखिर उन्होंने यह सोचकर सन्तोष किया कि जब पोता पैदा होगा तो उस अन्याय की सारी कसर निकलेगा। आखिर उन्होंने जो सोचा था वही हुआ। कुछ दिनों बाद कृपा-शङ्कर के यहाँ एक लड़का पैदा हुआ। "होनहार बिरवान के होत चिकने पात"। लड़के को देखते ही आस पड़ोस वालों ने कहा - "लड़का ठीक अपने दादा को पड़ा है। यह उन्हीं की तरह उदार होगा।" इसीलिए वह उसको धर्मपाल कहने लगे। लेकिन बूढ़े और बुढ़िया के नसीब में पोते को जी भर देखना और

बहू के ही हाथ में रहती है। उसके माँ-बाप ने यह सोचकर एक रूपवती कन्या से उसका ब्याह कर दिया। लेकिन बहू क्या थी कि उसके माँ-बाप एक वला ही खरीद ले आए। पहले तो उसकी कञ्जूसी से माँगने वालों को ही दुख पहुँचता था। लेकिन अब उसके माँ-बाप को ही उसका मजा मिलने लगा। बच्चों ! जानते हो कृपा-शङ्कर ने क्या किया ? उसने अपने माँ-बाप को घर से निकाल दिया। उनको गोठ की गन्दगी में रहने के लिए कहा। टूटी खाटों पर सोने के लिए कहा। पहनने ओढ़ने के लिए उन्हें गूदड़

गोदी में लेकर खेलना भी बदा न था। कृपा-शङ्कर ने ऐसा बन्दोबस्त किया कि लड़के को अपने दादा और दादी की कोई खबर भी न लग सके।

लेकिन धर्मपाल ने जब होश सम्भाला तो उसे अपने दादा और दादी की सारी दुर्दशा मालूम हो गई। उसके पिता ने उसको गोठ में जाने से मना कर दिया था। लेकिन वह छिपकर रोज दादा के पास पहुँच जाता। कुछ दिन में कृपा-शङ्कर को इसका पता चल गया। लेकिन वह कुछ कर न सकता था। अब धर्मपाल खुले-खजाने दादा के पास जाने लगा। वह इसी सोच में पड़ा था कि कैसे दादा का कष्ट दूर करे!

एक दिन कृपा-शङ्कर अपने माँ-बाप को खाना देने के लिए गोठ में गया तो धर्मपाल भी उसके साथ हो लिया। जब बूढ़े ने रुखा-सुखा खा लिया तो उसके ठीकरा में माण्ड डाल दिया गया। बूढ़े ने माण्ड पीने के लिए ठीकरा उठाया। लेकिन बुढ़ापे के कारण उसके



कमजोर हाथों से ठीकरा छूट गया और गिरकर टूक टूक हो गया। तब धर्मपाल ने, जो पास ही खड़ा-खड़ा देख रहा था, झपट कर अपने दादा का हाथ पकड़ लिया और कहा - "दादा जी ! आपने ठीकरा फोड़ दिया ! कहिए, अब मेरा काम कैसे चलेगा ? जब मेरे माँ-बाप बूढ़े हो जाएँगे तो फिर मैं उनको किस चीज से माण्ड पिलाऊँगा ? आपने यह अच्छा नहीं किया। अब तो मुझे एक नया ठीकरा खरीदना होगा।" उसने गुस्सा दिखाते हुए कहा।

अब कृपा-शङ्कर को अपनी गलती मालूम हो गई। बूढ़े माँ-बाप के प्रति उसका जो कर्तव्य था उसके लिए वह शर्मिन्दा होने लगा। अब उसे डर भी लगा कि इस पाप के फल स्वरुप बुढ़ापे में कहीं उसकी भी ऐसी ही दुर्गत न हो। वह तुरन्त अपने माँ-बाप के पैरों पड़ गया और आँसू बहते हुए माफी माँगी। उसको पछताते देखकर उसके माँ-बाप का मन भी साफ हो गया। वह धर्मपाल की चतुराई देखकर बहुत खुश हुए और उसे बार-बार आशीर्वाद देने लगे।

अब कृपा-शङ्कर ने बड़े प्रेम के साथ माँ-बाप को महल में ले जाकर रखा। उसने अब उनकी सेवा-टहल में कोई कसर न होने दी। उसके परिवार में फिर से आनन्द का राज हो गया और उनके दिन हँसते खेलते कटने लगे।





एक घने जङ्गल में एक बाघ रहता था। वह उसे जङ्गल का राजा था और उसका मन्त्री था एक तोता। वह तोता बड़ा दयालु, दानी और परोपकारी था। जो कोई उस जङ्गल में आ जाता, उसको तोता अपने राजा से कहकर रुपया पैसा दिलाता और बड़ी इज्जत के साथ जङ्गल पार कर देता। इसलिए तोता जब तक मन्त्री रहा तब तक जङ्गल के राजा का यश सारे संसार में फैल गया।

एक दिन एक गरीब ब्राह्मण उस जङ्गल में आया। उसने जाकर बड़ी दीनता के साथ मन्त्री तोता की शरण ली। तोते को उस बेचारे ब्राह्मण पर बड़ी दया आई। उसने अच्छा समय देखकर जङ्गल के राजा से गरीब ब्राह्मण की सिफारिश की। तब बाघ ने कहा -"अच्छा ! तो तुम उसकी सहायता कर दो। राजा का धर्म ही है कि वह सङ्कट में पड़े हुए लोगों को उबारे। यह कौन सी बड़ी बात है !" तब तोते ने ब्राह्मण को बहुत सारा धन दे दिया। ब्राह्मण खुशी-खुशी घर लौट गया।

वह ब्राह्मण उसे धन से एक साल तक बड़े सुख से रहा। लेकिन था वह बड़ा खर्चीला। इसलिए थोड़े ही दिनों में सारा धन चूक गया और वह फिर भूखों मरने लगा।

तब उसे फिर जङ्गल के मन्त्री तोता की उदारता और दानशीलता याद आई। वह फिर उसे जङ्गल की ओर चला।

लेकिन तब तक बाघ राजा के दरबार में बड़े-बड़े हेर फेर हो गए थे। अब मन्त्री के आसन पर तोता के बदले कौआराम विराजमान थे।

ब्राह्मण ने मन्त्री को कौआराम के पास जाकर अपनी राम कहानी सुनाई। कौए ने कहा -"ब्राह्मणों के सत्कार से बढ़कर और कौन सा पुण्य हो सकता है ! आप यहीं बैठे रहिए।

रमाकान्त जायसवाल



मैं अभी राजा से कहकर आपकी मदद कर देता हूँ। यह कहकर कौवाराम बाघ के पास गया। "आज बहुत दिनों बाद हमारी किस्मत खुल गई है। देखिए न ! बैठे बिठाये मनुष्य का मांस खाने को मिल रहा है। एक भारी तोंद वाला मोटा ताजा ब्राह्मण आपके दर्शन के लिए आया है। उसका कैसा सत्कार करना है सो तो आप जानते ही हैं।" कौवाराम में बाघ से कहा और जाकर ब्राह्मण को उसके पास भेज दिया। ब्राह्मण को देखते ही बाघ गरज कर उस पर टूटा। ब्राह्मण ने काँपते हुए हाथ जोड़कर कहा -"राजन ! मैं गरीब बाल बच्चों वाला आदमी हूँ। मुझे न मारिए। पिछली बार आपने मुझ पर बड़ी कृपा की थी। आपके ही दान से आज तक में बच्चों सहित सुख से दिन कट रहा था। मैंने सोचा था कि इस बार भी आप मुझ गरीब की मदद कर बेड़ा पार लगा देंगे। इसलिए मैं यहाँ आने का साहस कर सका। अगर मुझे मालूम होता कि आप मुझे मार डालेंगे तो मेरी क्या मजाल थी कि मैं यहाँ तक आ जाता ! ब्राह्मण की यह बातें सुन

कर बाघ को कुछ तरस आ गया। उसने कहा -"पगले कहीं के ! देखते नहीं कि जमाना बदल गया है। धर्म बदल गया है। साथ ही राज्य मन्त्री भी बदल गया है। क्या तुम समझते हो कि अब भी दुनिया उसी बाबा आदम के ढङ्ग पर चल रही है ? तुम सोचते होगे कि राजा तो नहीं बदला है। लेकिन यह तुम्हारी भूल है। मन्त्री के साथ-साथ राजा भी बदल जाता है। राजा तो मन्त्री की सलाह पर चलने वाला कठपुतला है। पिछली बार मेरे मन्त्री तोते ने तुम्हारी सिफारिश की थी। इसलिए तुम्हें उतना धन मिला था। नए मन्त्री की सलाह के अनुसार आज मैं तुझे खा जाता। लेकिन तुमसे पुरानी जान पहचान है। इसलिए तरस खाकर छोड़ देता हूँ। अब तुम यहाँ से तुरन्त रफू-चक्कर हो जाओ। नहीं तो कुशल न होगी।"

ब्राह्मण भगवान का नाम लेकर वहाँ से सिर पर पैर रखकर भाग निकला। वह मन ही मन डर रहा था कि कहीं बाघ फिर अपना निश्चय बदल ना डाले।

ब्राह्मण की स्त्री बड़ी उतावली हो कर अपने पति की राह देख रही थी। ब्राह्मण को खाली हाथ आते हुए आया देखकर उसका मन निराश हो गया। ब्राह्मण ने जब सारी कहानी उससे कह सुनाई तो उसने काली माँ का नाम लेकर कहा -"धन्य काली मैया ! उनकी कृपा से धन नहीं मिला तो न सही। जान तो बच गई। गरीबी में भी दिन किसी न किसी तरह कट ही जाते हैं। न होगा तो और किसी ऐसे राजा की शरण लेंगे जिसके दरबार में अच्छा मन्त्री हो।" यह कहकर उसने सुख की साँस ली।





पुराने जमाने की बात है। इन्द्रद्युम्न कलिङ्ग देश का राजा था। उसे एक दिन समुद्र की सैर करने का शौक हुआ। राजा का शौक पुरा न हो तो किसका हो ? तुरन्त हंस के आकार का एक सुन्दर जहाज बनाया गया। राजा अपनी स्त्री और मन्त्रियों के साथ उसपर चढ़कर समुद्र की सैर करने निकला। जहाज ने लङ्गर उठाया। मस्तूल से पाल ताना गया और जहाज तीर की तरह लहरों को चीरता निकल पड़ा।

लेकिन न जाने जहाज किस बुरी साइत से चला था ! बीच समुद्र में जाते-जाते बड़ा भारी तूफान आ गया। हवा के झोंकों से पाल की धज्जियाँ उड़ गई। मस्तूल टूट गया और जहाज सूखे पत्ते की तरह डोलने लगा। जहाज के सब लोगों के प्राण नाखून में समा गए। खलासियों ने जहाज को किनारे लगाने की बड़ी कोशिश की। लेकिन उनकी एक न चाली। थोड़ी देर बाद पहाड़ जैसी एक ऊँची तरङ्ग उठी और पल में जहाज को निगल गई। जहाज पर जितने लोग थे सभी जल गर्भ में जाकर सदा के लिए सो गए। महाराज इन्द्रद्युम्न गोते खा ही रहे थे कि उन्हें एक कुन्दे का सहारा मिल गया। वह तैर कर जान बचाने की कोशिश करने लगे। थोड़ी देर बाद उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि उस कुन्दे का दूसरा सिरा पकड़कर और कोई तैर रहा है। उन्होंने पूछा -"कौन है ?" "मैं रानी हूँ।" जवाब आया। यह सुनकर महाराज को पहले तो बड़ी खुशी हुई। लेकिन तुरन्त मन में विचार उठा कि आखिर हम कितनी देर तक इस तरह तैरते रहेंगे। उन्होंने रानी से कहा -"चाहे जो कुछ भी हो कुन्दे को छोड़ना मत। अगर भगवान की कृपा हुई तो हम दोनों इसी के सहारे पार लग जाएँगे।" आखिर हुआ भी

ऐसा ही। इस कुन्दे के सहारे तैरते हुए दोनों किनारे पहुँच गए। और कोई होता तो उसे कुन्दे को वहीं छोड़कर अपनी राह पकड़ता। लेकिन राजा और रानी ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने समझा कि भगवान ने ही उसे कुन्दे के रूप में उनकी जान बचाई है। इसलिए उन दोनों ने बड़ी श्रद्धा के साथ उस कुन्दे की प्रदक्षिणा की और उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया। तब महाराज ने रानी से कहा -"इसी कुन्दे के कारण आज हम दोनों की जान बची है। यह कोई मामूली कुन्दा नहीं है। इसलिए हम इस कुन्दे से दो देव मूर्तियों बनवाकर उन्हें मन्दिर में रखेंगे और उनकी पूजा करेंगे। क्यों ? यह अच्छा होगा न ?" रानी ने जवाब दिया -"आपको तो अच्छी बात सूझ गई। हम जरूर ऐसा ही करेंगे। इसी कुन्दे ने तो हमारी जान बचाई है।"

राजा और रानी इस कुन्दे को लिवा कर अपने महल में पहुँच गए। दूसरे दिन तक राजभर में यह बात फैल गई की एक लकड़ी के कुन्दे ने राजा की जान बचाई है। इसीलिए राजा उससे दो देवमूर्तियों बनवाना चाहते हैं। बस ! अब क्या था ? देश के



कोने-कोने से मिस्त्री लोग आकर राजा के दरबार में जमा हो गए। हर कोई कहता था की मूर्तियाँ बनाने का काम मुझे को सौंप दीजिए। उन सबको देखकर राजा बड़ी चिन्ता में पड़ गया कि आखिर मूर्तियाँ बनाने का काम सोपा जाए तो किसे ? उसे कैसे मालूम हो कि कैसे अच्छा शिल्पी कौन है ? इसलिए उसने सबसे कह दिया कि मैं इसका निर्णय कल करूँगा।

उस रात राजा को भगवान ने सपने में दर्शन देकर कहा -"हे राजा !उसे कुन्दे से देवमूर्तियाँ बनाने का काम उन शिल्पियों में से किसी को न सौंपना। वे उसके योग्य



नहीं है। कल तुम्हारे दरबार में एक बूढ़ा शिल्पी आएगा। उसी को यह काम सौंपना।" इतना कहकर वह अन्तर्धान हो गए।

दूसरे दिन सचमुच एक बूढ़े शिल्पी ने राजा के दरबार में आकर कहा - "राजन ! मैं एक शिल्पी हूँ। मैंने सुना है कि आप दो मूर्तियाँ बनवाना चाहते हैं। मैं आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ।" लेकिन वह शिल्पी बड़ा बूढ़ा था। वह तो बगैर लाठी के चल ही नहीं सकता था। इसलिए सभी दरबारी काना-फूसी करने लगे कि यह क्या खाक मूर्तियाँ बनाएगा !लेकिन राजा ने अपने सपने की याद करके उसी को यह काम सौंपा। तब वहाँ और जितने शिल्पी थे सब मन ही मन राजा को कोसते हुए चले गए। लेकिन हर किसी के मन में अभी यही आशा थी कि जब इस बुड्ढे से काम नहीं होगा तो राजा मुझ ही को बुलाएँगे।

उस बूढ़े शिल्पी ने पहले राजा के सामने कुछ शर्तें रखी -"जब तक मैं यह मूर्तियाँ बनाता रहूँ, तब तक कोई मेरे पास न आने पाए। मैं एक बन्द घर में बैठकर मूर्तियाँ बनाऊँगा। जब मेरा काम खत्म हो जाएगा तो मैं खुद किवाड़ खोलकर बाहर आ जाऊँगा। लेकिन इस बीच में कोई मुझे ना छेड़े। नहीं तो काम पूरा नहीं होगा। राजा ने उसकी शर्तें मान ली। लेकिन दरबारियों ने मन में कहा -"देखें ! यह बूढ़ा अँधेरे में बैठकर कैसे मूर्तियाँ बनाता है ! क्या वह डरता है की मूर्तियों का नजर लग जाएगी !"

राजा ने शिल्पी के लिए एक घर बनवा दिया। बूढ़ा उसे कुन्दे को लेकर घर में बैठ गया और अन्दर से सारे दरवाजे बन्द कर लिए। यूँ कई दिन बीत गए। बूढ़ा खाना खाने के लिए भी घर से बाहर नहीं आता था। आखिर कुछ शिल्पियों के मन में इच्छा पैदा हुई जाकर देखें, बूढ़ा अन्दर क्या कर

रहा है। उन्होंने घर के पास जाकर बड़ी देर तक किवाड़ के छेद से कान लगाकर सुना। लेकिन उन्हें कहीं किसी तरह की आहट ना सुनाई पड़ी। उस घर के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ था। तब उन्होंने राजा के पास जाकर कहा - "महाराज ! उसे बूढ़े ने आपको अच्छा चकमा दिया है। वह तो उस घर में है ही नहीं। उस घर से तो किसी तरह की आहट नहीं सुनाई देती। वह बूढ़ा सब की आँख बचाकर कभी का भाग गया होगा।" लेकिन राजा को तो उस बूढ़े पर पूरा विश्वास था। इसलिए उसने उन चुगलखोरों को खूब फटकारा। वे अपने पिटे मुँह लेकर चले गए।

और कुछ दिन बीत गए। लेकिन बूढ़े के घर के किवाड़ अभी नहीं खुले। तब फिर कुछ शिल्पियों ने जाकर राजा से कहा -"राजन ! बूढ़े के घर में तो बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है। कहीं बूढ़ा भूखों मर तो नहीं गया ! उसे कुछ न कुछ जरूर हो गया होगा। नहीं तो वह अब तक मूर्तियाँ बना चुका होता।" इस बार राजा को सचमुछ शङ्का हो गई। इस तरह दिन-रात कान भरते रहने से राजा का धीरज भी टूट गया। तब राजा ने



बूढ़े के घर के पास जाकर किवाड़ खटखटाया। लेकिन अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। तब राजा ने निराश होकर जबरदस्ती दरवाजा खुलवाया। लेकिन अन्दर जाकर देखने पर आश्चर्य !न वहाँ पर बूढ़ा शिल्पी ही था और न वह लकड़ी का कुन्दा ही। वहाँ दो सुन्दर मूर्तियाँ मात्र पड़ी हुई थी। उन मूर्तियों का रूप देखकर राजा मुग्ध हो गया। लेकिन इतने में उसे मालूम हुआ कि उन दोनों मूर्तियों के न हाथ हैं और ना पैर। यह कैसी मूर्तियाँ हैं !

इतने में भगवान की उस मूर्ति ने कहा -"है राजा ! तुमने नाहक उतावली की। अगर

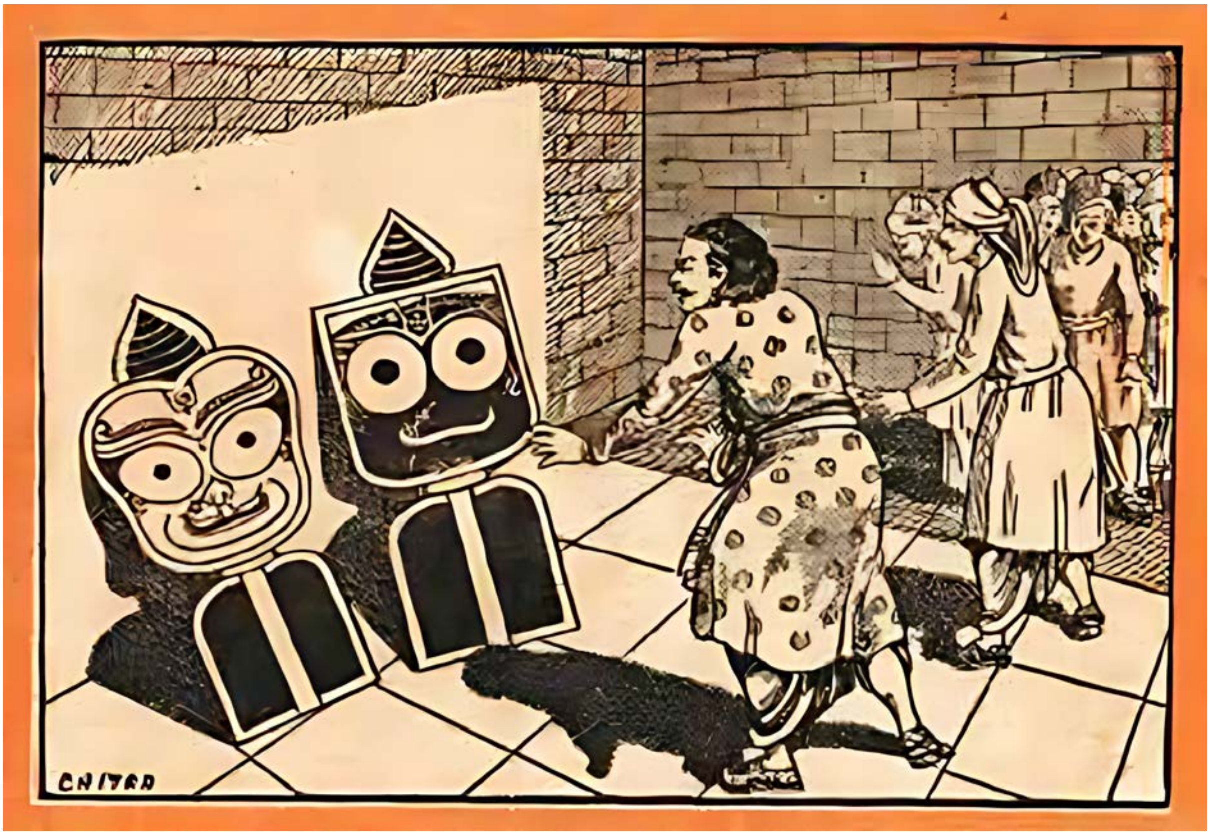
तुम थोड़े दिन और रुक जाते तो हम दोनों के हाथ पैर भी बन जाते तुम्हारी उतावली के कारण अब हमें बिना हाथ पैर के ही रह जाना पड़ेगा

तब राजा ने दण्डवत करके कहा - "भगवान ! क्षमा कीजिए। मुझे शङ्का हो गई थी कि वह बूढ़ा मर गया है। इसलिए मैंने किवाड़ खुलवाए। लेकिन वह शिल्पी कहां है ? वह कहीं नहीं दिखाई देता।"

"मैं ही वह शिल्पी हूँ।" भगवान ने कहा।

अब महाराज को अपनी भूल मालूम हो गई। "लेकिन आप पछताए होत क्या चिड़िया चुग गई खेत"। उन्होंने तुरन्त सागर किनारे पुरी में जहां उन्हें वह कुन्दा मिला था, एक बड़ा भारी मन्दिर बनवाया। उस मन्दिर में उन्होंने दोनों मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवाई।

उसी दिन से उड़ीसा का पुरी जगन्नाथ बड़ा भारी तीर्थ स्थान बन गया। आज भी भारत के कोने-कोने से लाखों लोग हर साल जगन्नाथ जी देखने जाते हैं।





एक शिकारी था जिसका नाम था धनुञ्जय। वह बड़ा हृष्ट-पुष्ट सुन्दर जवान था। डर तो उसे छू तक नहीं गया था। घने जङ्गलों में, ऊँचे पहाड़ों पर और खतरनाक जगह में वह अकेला घूमा करता था।

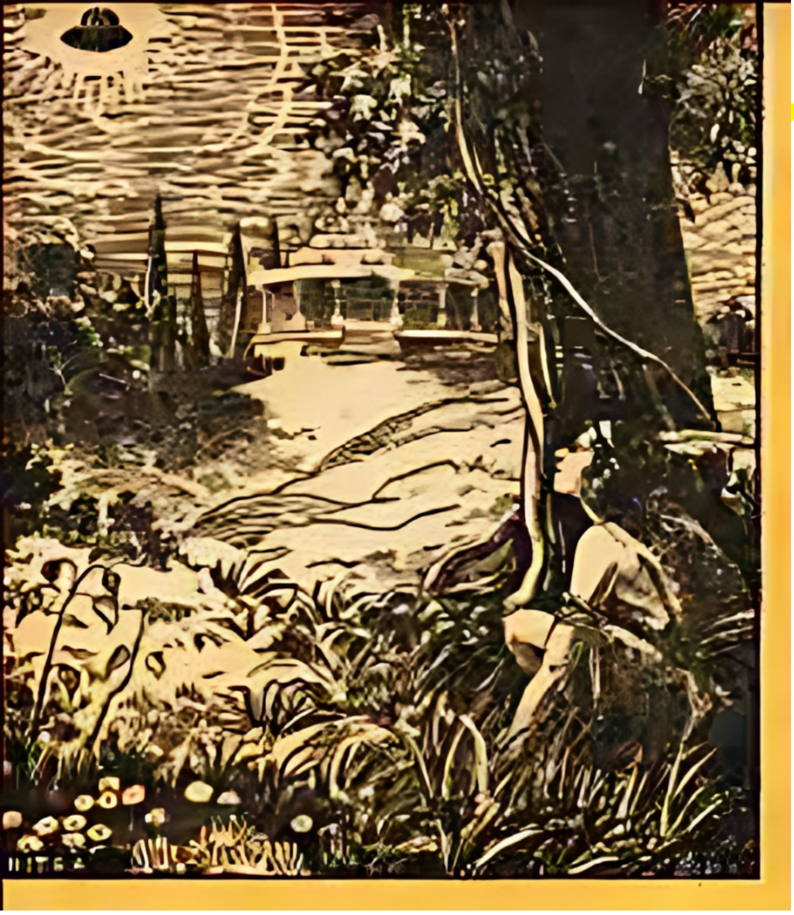
एक दिन धनुञ्जय तड़के उठकर एक नई जङ्गल की तरफ चला। उसे जङ्गल के बीचोंबीच घुसने पर उसे एक मैदान मिला। वहाँ हरी मुलायम घास कालीन की तरह बिछी हुई थी। जगह-जगह सुंदर रङ्ग -बिरङ्गे फूल सुगन्ध फैला रहे थे।

उस मैदान में थोड़ी दूर आगे बढ़कर वह अचानक रुक गया। उसे सङ्गमरमर का एक गोल चबूतरा सामने दिख पड़ा। उसके चारों ओर तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। धनुञ्जय अनेकों जङ्गलों की सैर कर चुका था। लेकिन ऐसे फूल उसने कहीं देखे नहीं थे। शायद वह देवलोक के फूल थे। धनुञ्जय ने सोचा कि चलो उस चबूतरे पर बैठे और थोड़ी देर आराम करें। लेकिन उस पर जाने के लिए उसे कोई रहा नहीं मिली।

धनुञ्जय खड़ा-खड़ा सोच रहा था कि अब क्या किया जाए। इतने में उसे कहीं से एक अलौकिक गान सुनाई देने लगा। वैसा गान उसने कभी नहीं सुना था। वह किसी मनुष्य का कण्ठ नहीं जान पड़ता था। धनुञ्जय ने जब सिर उठाकर चारों ओर देखा तो उसे आसमान से कोई गोल-गोल चीज धीरे-धीरे जमीन की ओर उतरती दिखे पड़ी। धनुञ्जय समझ गया कि वह गाना उसी से आ रहा है।

ज्यों ज्यों वह चीज जमीन के नजदीक आती गई त्यों त्यों उसका रूप भी स्पष्ट होने लगा। साथ-साथ गाना भी स्पष्ट सुनाई देने

चन्द्रप्रकाश सिंह



लगा। थोड़ी देर में धनुञ्जय ने देखा कि वह एक उड़न-खटोला है और उसमें कोई बैठा है। गौर से देखने पर धनुञ्जय को उसमें सात अत्यन्त सुन्दर वालाएँ दिखाई पड़ी। देखने में वह सब एक सी थी। यह भी नहीं कहा जा सकता था कि उनमें कौन बड़ी है और कौन छोटी। सभी मानो एक ही साँचे में ढली हुई थी।

वह सात युबतियाँ घुटनों तक लटकने वाले लम्बे काले केश फहराती नीचे उतर आई और एक दूसरे का हाथ पड़कर उस चबूतरे पर नाचने लग गई। उनके नृत्य से उस चबूतरे के चारों ओर सुनहरी किरणों का एक घेरा सा बन गया। उनका गाना स्वर्ग की नदी मन्दाकिनी के कलख सा जान पड़ता था।

यद्यपि वे साथ कुमारियाँ एक सी थी, फिर भी ध्यान से देखने पर पता चल जाता था कि एक उनमें से सबसे ज्यादा सुन्दर है। उनकी बातें सुनने से धनुञ्जय को मालूम हो गया कि वह सब बहनों से छोटी है और उसका नाम है तारा। उसको देखते ही धनुञ्जय मुग्ध हो गया।

वह थोड़ी देर तक चुपचाप वैसे ही खड़ा रहा। लेकिन आखिर जब उससे नहीं रहा गया तो उसने जोर से उन्हें पुकारा। उसको देखते ही सात कन्याएँ झट उड़न खटोले में बैठ गई और पलक झपकते आँखों से ओझल हो गई।

धनुञ्जय हाथ मलता हुआ घर लौटा। राह मैं उसे एक तोता दिखाई पड़ा। धनुञ्जय ने जब उस पर निशाना लगाया तो उसने कहा -"भाई ! अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें एक ऐसा मन्त्र बताऊँगा जिसके जपने

से तुम पशु-पक्षी का रूप भी धारण कर सकते हो। धनुञ्जय ने धनुष पर से तीर उतार लिया। पेड़ से उतर कर तोता उसके कन्धे पर आ बैठा और उसने धीरे से उसके कानों में मन्त्र कह दिया।



दूसरे दिन धनुञ्जय एक बिलाव का रूप धारण कर उसे चबूतरे के पास लेटा रहा। जब समय पर वह कुँवारियाँ फिर आसमान से उतरी, तो वह उठकर उनकी ओर चला। लेकिन उसकी आहट सुनते ही वह सब उड़ान खटोले पर चढ़ गईं और पल भर में गायब हो गईं । धनुञ्जय फिर निराश होकर लौट आया।

तीसरे दिन धनुञ्जय ने बड़ी देर तक सोच विचार कर एक सुनहरे चूहे का रूप धारण किया और चबूतरे के नीचे क्यारी में इधर-उधर दौड़ने लगा। समय पर देव कुमारियाँ आसमान से उतरी और चबूतरे पर रोज की तरह नृत्य करने लगी। थोड़ी देर के बाद उनके नृत्य समाप्त हो गया और वह लौट कर जाने की तैयारी करने लगी। इतने में एक सुनहरा चूहा चबूतरे पर चढ़ाया और इधर-उधर दौड़ने लगा। उस चूहे को देखकर सबसे छोटी लड़की तारा उस पर लट्टू हो गई। वह उसे पकड़ने की कोशिश करने लगी। लेकिन उसने उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो सुनहरे चूहे ने मनुष्य का रूप धारण कर लिया और उसका हाथ पकड़ लिया। यह देख अन्य कुमारियाँ भयभीत हो गई और तारा को वहीं छोड़कर उड़न खटोले पर जा बैठी। देखते-देखते उड़न खटोला आसमान में छुप गया।



धनुञ्जय अब बड़े प्रेम से तारा को समझाने बुझाने लगा -"डरने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं दूँगा। मैं तुम्हें हमेशा सर आँखों पर रख कर पूजा किया करूँगा। इसके बाद उसने उसे तरह-तरह की कहानी सुनाई। उसने शिकार की मनोरंजक घटनाएँ खूब बढ़ा चढ़ा कर उसके सामने बखान की। यहाँ तक कि थोड़ी देर में तारा का सारा डर दूर हो गया। धनुञ्जय ने उसे अपने घर ले जाकर ब्याह कर लिया। कुछ दिन बाद तारा सच में उससे प्रेम करने लगी। उसका एक सुन्दर लड़का भी पैदा हुआ। लेकिन तारा के मन में यह शङ्का बनी रही कि न जाने उसके पिता क्या सोचते होंगे ?

तारा देवराज की साथ कन्याओं में सबसे छोटी थी। उसके पिता उसी को सबसे ज्यादा प्यार करते थे। जितने दिन बीतते गए, उसके मन में पिता को देखने की इच्छा बढ़ती गई।

वह जानती थी कि बाँस की एक बड़ी टोकरी बनाकर अपने दिव्य गान की महिमा से वह उसे उड़न खटोले की तरह आसमान में उड़ा ले जा सकती है। इस तरह पिता को देखने जाना उसके लिए कोई मुश्किल काम न था। लेकिन उससे धनुञ्जय को छोड़ते भी नहीं बनता था।

इसी तरह और कुछ दिन चले गए। आखिर जब उससे न रहा गया, तो उसने जाने का निश्चय कर लिया। बाँस की खाचियों की एक बड़ी टोकरी तैयार की। एक दिन वह पति की आँख बचाकर टोकरी जङ्गल में उस चबूतरे के पास ले गई और झट से अपने लड़के के साथ टोकरी में बैठकर गाना शुरू

कर दिया। तुरन्त टोकरी जमीन से उठकर आसमान में उड़ने लगी।

धनुञ्जय दूर से यह गाना सुनकर अचरज में पड़ गया। उसने सोचा - "इतने दिनों बाद आज फिर कहाँ से यह गीत सुनाई दे रहा है !" जब उसने आसमान की और नजर फेरी तो उसे उड़ती हुई टोकरी में लड़के के साथ तारा दिख पड़ी। वह घबराकर चिल्ला उठा -"तारा ! तारा ! लौट आओ। मेरी बात मानो और लौट आओ। तुम मुझे क्यों छोड़े जा रही हो ? मैंने क्या अपराध किया है ?" वह बहुत गिड़गिड़ाया। पर टोकरी ऊपर उड़ती ही गई। यहाँ तक कि थोड़ी देर में वह आँखों से ओझल हो गई। बेचारे धनुञ्जय की पुकार सुने आसमान में गूँज कर रह गई।

वह बेचारा अपना सब कुछ खोकर पागल बना घर लौटा। सुना घर उसे काट खाने लगा। शोक में डूबा हुआ वह संसार से विरक्त हो गया और ज्यों-त्यों कर पहाड़ से दिन काटने लगा। लेकिन उसके मन के किसी कोने में अभी आशा की किरण बची हुई थी।



अपनी प्यारी लड़की तारा को पुत्र सहित आई देखकर उसका पिता बहुत खुश हुआ। तारा पिता के घर में खुशी से रहने लगी। लेकिन उसके मन में धनुञ्जय की चिन्ता बनी रही। उसका लड़का दिन-दिन पिता की चिन्ता में घुलने लगा। दिन दिन उसका मुख पीला पड़ता गया और वह दुबला होता गया। यह देखकर तारा के पिता ने एक दिन उसे बुलाकर कहा -"बेटी ! लड़के को पिता की याद सता रही है। देखते नहीं,

वह कितना दुबला हो गया है ! तुम पृथ्वी पर जाकर अपने पति को भी यहाँ क्यों नहीं ले आती ? तुम दोनों यहाँ सुख से रह सकते हो।"

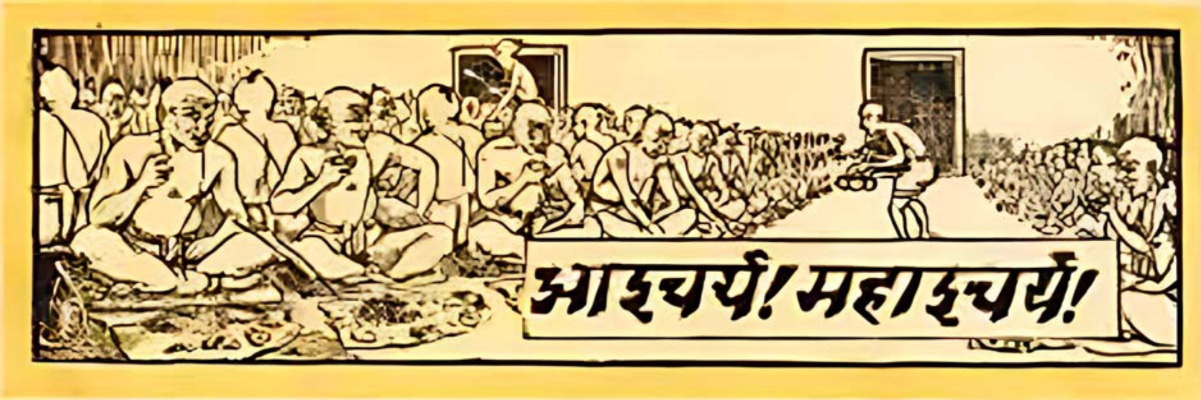
तारा तो यह चाहती ही थी। वह तो डर के मारे अब तक पिता से यह बात न कह सकी थी। नहीं तो कभी भी पति को यहाँ ले आती। आज जब उसके पिता ने खुद ही उसे इजाजत दे दी तो उसका सारा सङ्कोच दूर हो गया। वह तुरन्त उड़न खटोले पर बैठकर धरती पर उतर आई।

धनुञ्जय उस समय उसी चबूतरे के निकट बैठा बैठा तारा की याद कर रहा था। इतने में अचानक उसे वही दिव्य गान सुनाई पड़ा तो पहले उसे अपने कानों पर विश्वास न हुआ। लेकिन अब उसने सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा तो उसे बहुत दूर पर एक काला धब्बा सा दिखाई दिया जो पल-पल बड़ा होता जा रहा था। बेचारा खुशी के मारे बावला बन गया। थोड़ी देर में उसकी प्यारी तारा उसके सामने आ खड़ी हुई। दोनों की आंखों से आंसू बेरोकटोक बह रहे थे।

तारा ने उसे सारा हाल कह सुनाया। वह दो-तीन दिन पृथ्वी पर आनन्द से बिचरी। फिर पति को लेकर पिता के घर चली गई। तारा के पिता ने धनुञ्जय की बड़ी आव-भगत की। धनुञ्जय वहाँ बड़े सुख से रहने लगा।

आज भी वे दोनों दम्पति चिड़ियों का रूप धारण कर कभी-कभी पृथ्वी पर आ जाते हैं। वह अपनी पुरानी झोपड़ी के चारों ओर मँडराते हैं और कुछ देर बाद फिर अपने लोक को लौट जाते हैं।





एक बार एक गाँव में एक अमीर के घर बड़ी धूमधाम से शादी हो रही थी। सैकड़ो लोग शादी में आए थे। लोग पङ्गत के बाद पङ्गत खाने बैठते थे। ब्राह्मण भोजन चल रहा था। न जाने कहाँ -कहाँ से आकर झुण्ड के झुण्ड ब्राह्मण जमा हो गए थे। परोसने वाले नाकों दम हो रहे थे। पर बेचारे बड़ी मुस्तैदी से परोस रहे थे।

एक रोज पङ्गत में दो ब्राह्मण बैठे थे। उनमें एक बड़ा बातूनी था। वह पकवानों का स्वाद सराहता हुआ धीरे-धीरे खा रहा था।

दूसरा ब्राह्मण अनमने चित्त से भोजन कर रहा था। इसलिए पत्तल की तरफ उसका ध्यान न था।

उस रोज खासकर ब्राह्मणों की पङ्गत में परोसने के लिए यजमान ने बहुत बढ़िया आम मँगवाए थे। वह आम बड़े कीमती और बहुत ही रसीले थे।

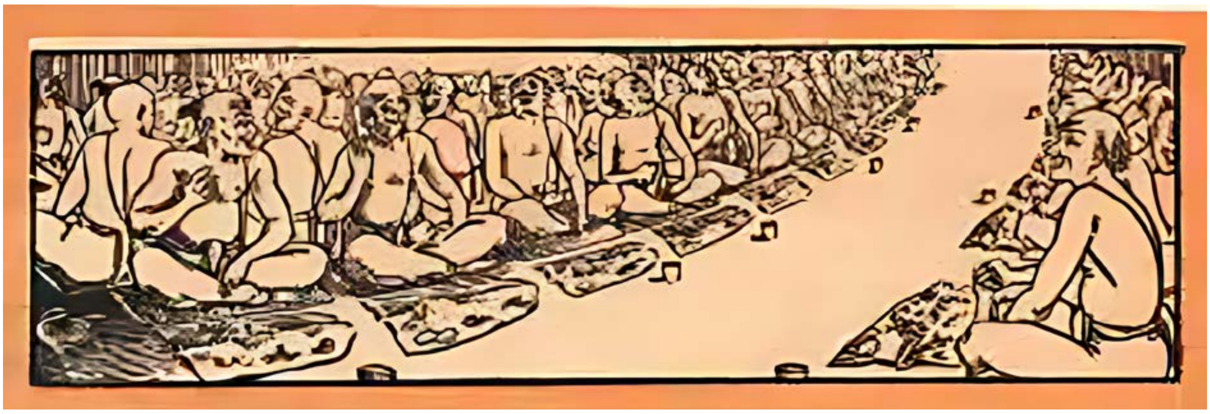
बातूनी ब्राह्मण ने जब आम खाना शुरू किया, तो गुठली उसके हाथ से छूटकर बगल के अनमने ब्राह्मण के पत्तल में जा गिरी। यह देखकर वह मन ही मन डरने लगा कि न जाने यह ब्राह्मण कैसा आदमी है ! मालूम नहीं और वह कितना हल्ला मचाएगा ! भोजन छोड़कर उठ जाएगा क्या ? वह मन ही मन पछताने लगा कि आज मैं नाहक यहाँ चला आया। न जाने कितना भला बुरा सुनना पड़ेगा ! उसे सूझता ही नहीं था कि अब क्या किया जा सकता है।

लेकिन वह दूसरा ब्राह्मण अपने बगल वाले से बात कर रहा था। इसलिए उसने यह सब देखा नहीं। थोड़ी देर बाद जब उसने अपने पत्तल की ओर नजर फेरी तो उसे एक के बदले दो गुठलियाँ दिखाई दी। उसने बातूनी ब्राह्मण से कहा - "मिश्रा जी ! देखिए तो कितने आश्चर्य की बात है। मेरे आम में दो गुठलियाँ हैं। मैंने आज तक ऐसे आश्चर्य की बात न कहीं देखी और न सुनी थी।"

यह सुनकर बातूनी ब्राह्मण ने मन ही मन सोचा -"यह तो भगवान ने इस सङ्कट से बाहर होने के लिए अच्छा रास्ता दिखा दिया है।" उसने जवाब दिया -"हाँ , हाँ शर्मा जी ! देखिए न ! इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि मेरे आम में गुठली है ही नहीं।" भगवान की लीला अपरम्पार है। उसके लिए कुछ भी अनहोनी नहीं।" इस तरह उसकी लाज बच गई।

उन दोनों की बातें सुनकर लोग खूब हँसने लगे। उन्होंने सोचा कहीं यह दोनों पागल तो नहीं हो गए हैं। लेकिन असली रहस्य उनमें से किसी की समझ में नहीं आया।

भूल चूक सभी से हो जाती है। लेकिन बुद्धिमानी के साथ अपनी भूल सुधार लेने में ही आदमी की तारीफ है।





किसी समय "रणधीर सिंह" नामक एक राजा मणिपुर नामक नगर में राज करता था। उसकी रानी का नाम लक्ष्मी देवी था। उसकी जैसी पतिव्रता स्त्री संसार में कोई नहीं थी। वह रानी थी। उसका पति उससे प्यार करता था। दुनिया में उसे किसी चीज की कमी न थी। तो भी वह हमेशा उदास रहा करती। कारण यह था कि उसके यहाँ कोई सन्तान न थी। सन्तान पाने के लिए उसने अनेकों पूजा-पाठ करवाए। सभी देवताओं की मनौतियाँ मानी। अपने हाथों सदाव्रत बाँटे। निर्धन लड़कियों के ब्याह करवाए। जगह-जगह कुँए और तालाब खुदवाए। सभी तीर्थों की यात्रा कर आई। लेकिन सन्तान न हुई। तब रानी ने अपने मन में सोचा -"राजपाट और धन-धाम से क्या लाभ है जब मेरी गोद सूनी पड़ी है ? रानी बनाकर बाँझ होने से तो पत्थर बनना अच्छा था। तब तो मुझे बाँझ की उपाधि न मिलती !

उस नगर से थोड़ी दूर पर भद्रगिरी नामक एक पहाड़ था। उस पहाड़ पर भद्रदन्त नामक एक मुनि तपस्या में लीन रहा करते थे। इसलिए उस पहाड़ का नाम भद्रगिरी पड़ गया था। रानी ने सोचा -"मैं जाऊँ उस पहाड़ पर। मुनि के पैरों पड़कर अपना दुखड़ा सुनाऊँ। शायद उन्हें दया आ जाए और कोई ना कोई उपाय बता दें।" उसने अपने मन की बात राजा से कही। राजा ने तुरन्त उसकी इच्छा के अनुसार प्रबन्ध कर दिया। फिर शुभ-मुहूर्त देखकर रानी भद्रगिरी पहाड़ के लिए चल पड़ी। आगे आगे कुछ घुड़सवार चल रहे थे। रानी की पालकी बीच में थी। उसके पीछे बहुत सी दासियाँ थी। रानी की सवारी देखने के लिए शहर के सभी स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे घरों से बाहर निकल आए।

थोड़ी ही देर में रानी पहाड़ के पास जा पहुँची। उसने घुड़सवारों और दासियों को



वहीँ पहाड़ के नीचे छोड़ दिया। स्वयं तीन दासियों को साथ लेकर वह पहाड़ पर चढ़ने लगी। बेचारी को कभी पैदल चलने का अभ्यास तो था नहीं। इसलिए उसके पैरों में छाले पड़ गए और जल्दी ही उसकी साँस फूलने लगी। लेकिन उसने हिम्मत न हरी और बहुत मुश्किल से वहाँ चढ़ी जहाँ मुनि भद्रदन्त तपस्या कर रहे थे।

मुनि निश्चल समाधि में बैठे थे। उनके चारों ओर लता-बेलें छा गई थी। उनके बालों में चिड़ियों ने घोसले बना दिए थे। घास फूस इस तरह उग आई थी कि मुनि उनसे ढक से गए थे और पहचानना मुश्किल था। रानी बड़ी सावधानी से उनके पास पहुँची और प्रणाम किया।

लेकिन मुनि अपने ध्यान में डूबे हुए थे। उन्हें दुनिया की कोई खबर न थी। इसलिए न वह हिले न डूले और न उनकी नजर ही खुली। रानी चुपचाप खड़ी रही। उनके ध्यान में कोई बाधा न डाली। वह डर रही थी कि कहीं मुनि गुस्सा न हो जाए। थोड़ी देर तक सोच विचार कर उनको जगाने के लिए उसने एक उपाय किया। उसने एक हाँडी में थोड़ा पानी और चावल मंगाया। फिर उसने दो पत्थर लेकर उन पर हाँडी चढ़ा दी और तीसरे पत्थर के बदले अपना घुटना टिका दिया। तब उसने हाँडी के नीचे आग सुलगा दी।

थोड़ी देर में आग भभक उठी। उसका घुटना जल गया। उसने सीख कर अपना घुटना खींच लिया। हाँडी नीचे लुढ़क गई और चावल जमीन पर बिखर गए।

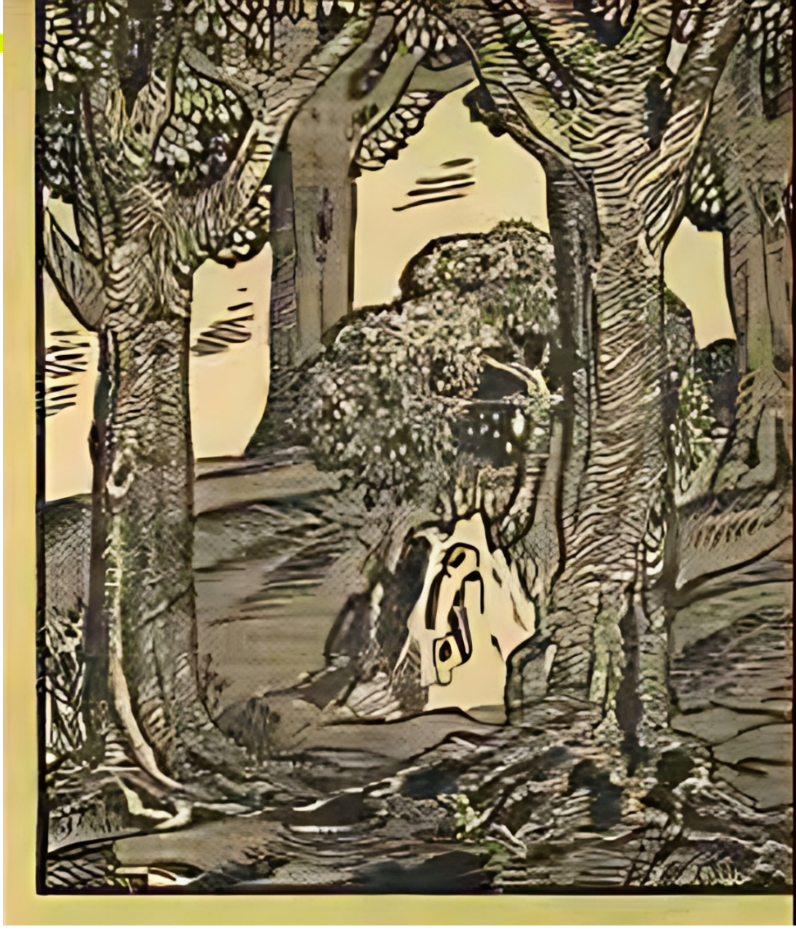
तुरन्त मुनी भद्रदन्त ने आँखें खोलकर कहा -"बेटी ! तुम किसी राजघराने की नारी मालूम होती हो। शायद तुम्हें कभी अपने हाथों रसोई बनाने की आदत नहीं

हो । इसलिए तुम्हें चूल्हा सुलगाना नहीं आता है। जाओ, और एक पत्थर ले आओ और तीनों पर हाँडी चढ़ाओ। इस तरह तो घुटना ही जला लोगी !"

रानी यही चाहती थी। वह मन ही मन खुश हुई और मुनि को फिर दण्डवत करके अपनी राम-कहानी सुनाने लगी। अन्त में आँचल फैलाकर, चरणों में माथा टेक कर वह बोली -"मुनिवर ! कोई ऐसा उपाय बताने की कृपा कीजिए जिससे मैं सन्तान का मुँह देख सकूँ।"

"लेकिन तुम्हारे भाग्य में सन्तान तो है नहीं।" मुनि ने कुछ सोच कर कहा।

यह सुनते ही रानी मूर्छित होकर गिर पड़ी। उसकी यह दशा देखकर मुनि को दया आ गई। उन्होंने ध्यान लगाकर देखा तो मालूम हुआ की रानी के सन्तान तो हो सकती है। लेकिन उसमें माता-पिता की जान का खतरा है। अगर लड़की हुई तो माता के प्राण न बचेंगे और लड़का हुआ तो पिता की जान खतरे में पड़ेगी। यह सब उन्हें साफ-साफ दीख पड़ा। लेकिन उन्होंने रानी से यह सब नहीं बताया। वे बोले -"बेटी ! यहाँ से थोड़ी दूर पर उत्तर की ओर



साँपों के राजा नागेन्द्र की बाँबी है। उसके चारों ओर चार बड़े-बड़े साल के पेड़ हैं। उनके बीच में बाँबी है और ठीक बाँबी के ऊपर एक आम का पेड़ है। उस पेड़ में बहुत से आम फले हुए हैं। तुम वहाँ जाकर पहले बाँबी की प्रदक्षिणा करना। फिर उस पेड़ से सात फल तोड़ना। घर जाकर नदी में स्नान कर उन सातों आमों का रस निचोड़कर पी जाना। अवश्य तुम्हारी कामना पूरी होगी।

रानी मुनि को प्रणाम करके बड़ी खुशी के साथ वहाँ से चली और सीधे नागेन्द्र की बाँबी के पास पहुँची। चारों ओर चार साल



पर ऊगा हुआ एक आम का पेड़। पेड़ की डालियाँ फलों से लदी हुई थी। रानी ने भक्ति-भाव से बाँबी की प्रदक्षिणा की और पेड़ पर चढ़ गई। लेकिन जल्दी में वह मुनि की हिदायत भूल गई और आँचल भर फल तोड़कर नीचे उतरी। उतरते ही उसे मुनि की बात याद आ गई। घबराकर उसने गिन कर देखा तो आँचल में सात ही फल निकले। उसे सन्तोष न हुआ। लालच के मारे वह फिर पेड़ पर चढ़ गई और आँचल भर फल तोड़ लाई। लेकिन नीचे उतर कर देखा तो फिर सात के सात ही निकले। वह तीसरी बार फिर पेड़ पर चढ़ी और फल तोड़ने लगी।

एकाएक धरती डोल उठी और पेड़ झूलने लगा। रानी के हाथ पैर ढीले पड़ गए। बाँबी में से बारह फन वाला नागेन्द्र क्रोध से फुफकारता बाहर निकाला और आम के पेड़ पर चढ़ने लगा। यह देखकर रानी के प्राण सूख गए।

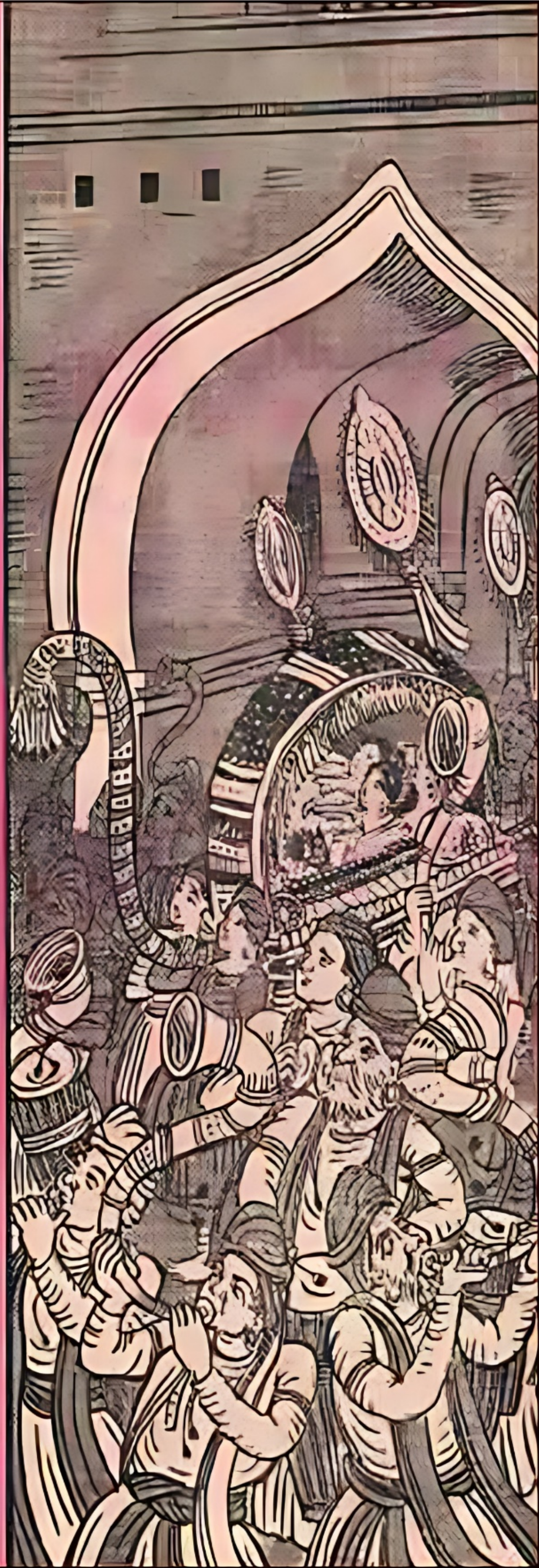
"कौन हो तुम, जो बिना मेरी इजाजत के मेरे पेड़ पर चढ़ गई हो और फल तोड़ रही हो ! देखो अब कैसा फल

मिलता है तुमको । नागेन्द्र सरसराता पेड़ पर चढ़ रहा था।

"हाय रे भगवान ! तुमने क्या किया ! अभी तो मेरी कामना पूरी नहीं हुई। मैंने जिसके लिए इतना कष्ट उठाया, उस सन्तान का मुँह तो देखा ही नहीं। मैं निःसन्तान ही मरने जा रही हूँ। है नागेन्द्र ! मेरी प्रार्थना सुनो। अपराध का दण्ड तो मुझे दो। लेकिन इतनी कृपा करो कि अभी मुझे छोड़ दो। जब मैं सन्तान का मुँह पहली बार देख लूँगी, तब से नौ महीने के बाद शेष पूनम को आकर मुझे डस लेना। तब तक तो मेरी जान बख्स दो।" रानी ने कातर होकर कहा।

"बहुत अच्छा ! तू जा। मैं तेरी बात मान लेता हूँ। तुम्हारी साथ लड़कियाँ होंगी। सबसे छोटी लड़की को मेरा नाम रख देना। लेकिन अपना वादा भूलना मत।" नागराज ने कहा।

"है नागराज ! तो क्या सभी लड़कियाँ ही होगी ? क्या मेरे भाग्य में लड़का नहीं लिखा है ? कम से कम एक लड़का तो दे दो।" रानी ने बड़ी दीनता से कहा।



"लेकिन अगर लड़का हुआ तो तुम्हें अपने सुहाग से हाथ धोना पड़ेगा।" नागेन्द्र ने कहा।

"तब मुझे लड़कियाँ ही दो। मैं सुहागिनी रहकर ही मरूँ। क्या लड़कियों से वंश नहीं चलता ?" रानी ने कहा। नागेन्द्र रानी को वादे की याद दिला कर अपने बिल में चला गया। रानी के मन की सारी चिन्ता दूर हो गई। वह खुशी-खुशी नीचे उतर आई और दास दासियों के साथ नगर को लौट पड़ी।

रानी के लौट आने की खबर सुनकर राजा बड़े आनन्द से अगवानी करने पहुँचा। वह उसे बड़ी धूमधाम के साथ महल में ले गया।

दूसरे दिन रानी ने नहा धोकर एक सोने की कटोरी में सात आमों का रस निचोड़ा और मन ही मन मुनि भद्रदन्त और नागेन्द्र का नाम लेकर उसे पी गई। रस पीने के छः घड़ी बाद रानी के गर्भ रह गया। उसका मुँह पीला पड़ गया। सातवीं घड़ी में रानी के प्रसव पीड़ा आरम्भ हुई। अनेकों चतुर दाइयों ने आकर रानी की देखभाल की।

आठवीं घड़ी में रानी की सात लड़कियाँ पैदा हुई। राजा ने तुरन्त शहर भर में खुशियाँ मनाने का हुक्म दे दिया।

लड़कियों के जन्म के तीन महीने बाद



राजा ने राजभर में पूजा-पाठ करवाया। पुरोहित ने आकर राजा की सातों लड़कियों का नामकरण किया। बड़ी का गुणवती, दूसरी का रूपवती, तीसरी का भाग्यवती, चौथी का हेमवती, पाँचवी का सुखवती, छठी का बुद्धिवती और सबसे छोटी का नाम नागवती रखा गया।

लड़कियों के चाँद से मुखड़े देखी हँसती खेलती रानी दिन दुनिया को भूल गई। बेचारी को बिल्कुल होश न रहा कि दिन बीत चले हैं। एक दिन उसने पुरोहित से पूछा कि शेष पूनम कब है। पुरोहित ने पत्रा देखकर उत्तर दिया "आज से तीसरे दिन।"

सुनते ही रानी सर से पाँव तक काँप उठी। तीन दिन के बाद नागेन्द्र आकर उसके प्राण हर लगा। फिर उसकी फूल सी कोमल सन्तान की देखभाल कौन करेगा ? अगर राजा दूसरा विवाह कर ले, तब तो सौतेली माँ उसके लिए नागिन बन जाएगी। हाय भगवान ! इन अनाथ बच्चियों की क्या दशा होगी !

यह सोचकर रानी ने राजा को बुला भेजा और उससे सारी कहानी कह दी। अन्त में यह भी कह दिया कि अब उसकी जिन्दगी के तीन ही दिन बाकी है। यह



सुनते ही राजा पर मानो गाज गिरी। मूर्छित होकर वह वहीं गिर पड़ा।

राजा को इस हालत में देखकर मन्त्रियों ने कहा -"महाराज ! आप कुछ चिन्ता न करें। हम ऐसा उपाय करेंगे कि नागेन्द्र रानी जी का बाल भी बाँका न कर सकेगा।"

फिर मन्त्रियों ने बीच बाजार में दो बहुत ऊँचे खम्बे गढ़वाए। एक सोने का सन्दूक बनवा कर उन खम्बों से लटका दिया। उस सन्दूक में रानी लेट गई। उसे चारों तरफ से बन्द करके ताला जड़ दिया गया। फिर उन खम्बों के चारों तरफ बड़ी गहरी खाइयाँ खोद कर उसमें तेल भर दिया गया और उसमें आग लगा दी गई। शहर के सभी दरवाजे मजबूती से बन्द कर दिए गए और सैकड़ो हथियारबन्द सिपाही घूम-घूम कर पहरा देने लगे। सारा शहर सावधान था। सब यही सोच रहे थे -"देखें ! अब नागेन्द्र कैसे आता है और रानी को कैसे डसता है !"

शेष पूनम आई। नागेन्द्र बहुत देर तक रानी की राह देखता रहा। लेकिन जब वह नहीं आई, तो उसे बड़ा गुस्सा आया। वह अपने बारहों फन फैला कर फुफकार उठा। फिर सरसराता नगर की तरफ चला। दूर से वहाँ की तैयारी देखकर उसके गुस्से का बार-पार न रहा। सूक्ष्म रूप धारण कर वह उड़ा और सीधे रानी के सन्दूक में जा पहुँचा। "अरी विश्वासघातीनी ! तूने सिर्फ अपना वादा ही नहीं तोड़ा। उल्टे मुझे मरवाने की कोशिश की। बोल ! चुप क्यों हो गई ?" नागेन्द्र ने जीभ लपलपा कर कहा।

"नागराज ! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं। यह सब मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ है। मैं तो अपना वादा पूरा करना ही चाहती थी।" रानी ने साहस बटोर कर कहा। किन्तु उसी समय उसे अपनी अबोध बच्चियों की याद आ गई और वह वही मूर्छित होकर गिर पड़ी। [संशेष]



CHANDAMAMA (Hindi) March '50 Regd. No. M. 5452

